प्रस्तावना

यह सम्पूर्ण पुस्तक दो भागों में बँटी है। प्रथम भाग में 'शिवमाहात्म्यखण्ड' तथा द्वितीय भाग में 'शिवोपासनाखण्ड', 'शिवोपासकखण्ड' तथा 'शैवतीर्थखण्ड' को सम्मिलित किया गया है। इसमें से प्रथम भाग प्रकाशित हो चुका है। इस प्रथम भाग को –

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।

(ऋग्वेदसंहिता 1/164/46 तथा अथर्ववेदसंहिता 9/10/28)

"जो एक सत् रुद्र है उसे ही बहुत प्रकार से मन्त्रद्रष्टा ऋषि वर्णन करते हुए इन्द्र, वरुण, मित्र, अग्नि, वायु, यम और उत्तम प्रकाशयुक्त, उदय-अस्तरूप से गमन करनेवाले, सूर्यरूप पक्षी इत्यादि नामों से पुकारते हैं" – इस वैदिक ऋचा का वेदों, उपनिषदों, रामायण ग्रन्थों, महाभारत, सभी महापुराणों तथा अनेक उपपुराणों, शिवप्रोक्त गीताओं तथा अन्य ग्रन्थों पर आधारित एक भाष्य माना जा सकता है। इस भाग में परब्रह्म सदाशिव के तत्त्व का विवेचन, अन्यान्य देवों से उनकी विशेषता तथा उनकी उपासना की सार्वभौमिक अनिवार्यता की चर्चा करते हुए उनकी अन्य प्रमुख देवों से अनन्यता का प्रतिपादन किया गया है। परब्रह्म तो एक ही है जो सर्ग, रक्षा एवं लय आदि कारणों से अपने को अनेक देव-रूपों में प्रकट करता है। अतः सभी देवरूप मूलतः एक ही हैं। और इस दृष्टि से देखने पर वे सभी रूप आपस में समान हैं-न कोई छोटा है न बड़ा।

इस प्रकार की उदार दृष्टि ही सभी ग्रन्थों का आशय है जिसकी उपेक्षा कर देने से विशेष देव का उपासक अन्य देवों के उपासकों से झगड़ पड़ता है और वह पाप का भागी बनता है। यह पुस्तक विरोधी विचारधाराओं, मुख्यतः शैव एवं वैष्णव, के समन्वय का एक लघु-प्रयास है। इस प्रयास में लेखक ने पहले बहुप्रचलित एवं प्रचारित देवता (मुख्यतः उत्तर भारत में) भगवान् विष्णु की सभी विशेषताओं का भगवान् शिव में होना एवं उनकी उपासना की सार्वभौमिकता दोनों ही शास्त्र-सम्मत हैं दिखाकर उन दोनों में तादात्म्य का संबंध स्थापित किया है।

इस पुस्तक के 'शिवोपासनाखण्ड' में देवपूजा-संबंधी सामान्य बातें; शिवपूजा की वैदिक एवं तान्त्रिक (आगमिक) पद्धतियों; पार्थिवपूजा, षडाक्षर वा पंचाक्षर, अष्टाक्षर एवं महामृत्युंजय मन्त्रों के जप एवं पुरश्चरण की विधियों; प्रदोष, शिवरात्रि तथा सोमवारव्रत की विधियों; कई प्रकार के हिन्दी एवं संस्कृत के स्तोत्रों जिनमें कई सहस्रनाम स्तोत्र भी सम्मिलित हैं; शिवपूजा एवं व्रतसंबंधी अनेक उपयोगी बातों जैसे भूतशुद्धि, मात्रिकान्यास, स्व की प्राणप्रतिष्ठा, श्रीकण्ठादि कलान्यास तथा अन्य प्रकार के न्यासों, सेवापराधों, जपमालासंस्कार की विधि तथा अनेक प्रकार के कवचों जैसे 'अमोघशिवकवच' तथा 'ब्रह्माण्डविजयकवच' आदि की चर्चा की गयी है। इन

सबके अतिरिक्त अनेक व्रतों, पंचाक्षरमंत्र तथा 'अमोघशिवकवच' आदि के माहात्म्य की कथा भी दी गयी है। मन्त्रों के संस्कार, मानसपूजा, मन्त्रजप की विधि एवं उनसे संबंधित नियमों, रुद्राष्टाध्यायी, पैराणिक शतरुद्रिय, एवं ज्योतिष के संदर्भ में शिवोपासना आदि की भी चर्चा की गयी है। यहाँ पर लिंगार्चन का महत्त्व, शिवनिर्माल्य-संबंधी विचार, पौराणिक शतरुद्रि तथा शतरुद्रियस्तोत्र आदि के बारे में भी विस्तार से चर्चा की गयी है। इस खण्ड के पाठक को शिवोपासना के सभी पहलुओं से संबंधित मुख्य बातों का ज्ञान हो जायगा। इतना ही नहीं व्रत, पूजा एवं उपासना आदि से संबंधित अनेक ऐसी बातों का भी यहाँ उल्लेख किया गया है, जो न केवल शिवोपासना के संदर्भ में अपितु वे सभी देवों की उपासना के सन्दर्भ में उपयोगी हैं। षोडशोपचार-पूजा के सभी अंगों का विस्तृत विवरण तथा व्रत-उपवास तथा जपसंबंधी सामान्य नियम, जिनका यहाँ उल्लेख किया गया है, सभी देवों की पूजा, सभी प्रकार के व्रतों तथा जपों पर लागू हो सकते हैं। अतः पाठक चाहे जिस देव का उपासक हो, उसके रुचि की सामग्री यहाँ पर मिल सकेगी।

प्रस्तुत पुस्तक के शिवोपासकखण्ड में भगवान् शिव के नाना प्रकार के उपासकों के प्रेरक जीवनवृत्तों पर प्रकाश डाला गया है जो प्रकारान्तर से भगवान् शिव की महत्ता का भी प्रतिपादन करते हैं। यों तो भगवान् शिव के अनन्त भक्त हैं परन्तु उनमें से यहाँ जिनका चयन किया गया है वे सभी वर्गों(देव, मानव, दानव, ऋषि-मुनि, गन्धर्व, पौराणिक तथा ऐतिहासिक) का प्रतिनिधित्व करते हैं। अवतारी पुरुषों में भगवान् राम, कृष्ण, परशुराम तथा नर-नारायण को; देवता एवं देवियों में भगवान् विष्णु, लक्ष्मीजी, बृहस्पति, इन्द्र, धर्मराज एवं भगवान् सूर्य को; ऋषि-मुनियों में मार्कण्डेय, शुक्राचार्य, विश्वामित्र, दधिचि, गौतम, दुर्वासा, लोमश, बाल्मीकि, व्यास, अनसूया एवं अत्रि, वसिष्ठ, च्यवन, जमदग्नि, पिप्पलाद, आपस्तंब तथा विश्वानर एवं गृहपति को; गंधर्वों में पुष्पदंत एवं कुबेर को; असुरों में बाणासुर एवं बलि को; ऐतिहासिक पुरुषों में आद्यशंकराचार्य, पाणिनि, भर्तृहरि, कालिदास, जगद्धरभट्ट, अप्पयदीक्षित, विधारण्य स्वामी, गोरखनाथ, संबंधर, अप्पर, सुन्दरर, माणिक्कवाचकर, रामकृष्ण परमहंस एवं विवेकानन्द को यहाँ पर विवेचन के लिये चुना गया है। इन लोगों के अलावा भी कुछ अन्य पौराणिक पात्रों जैसे राजा भगीरथ, राजा श्वेत, नन्दीश्वर, कण्णप्पर, ब्रज्रांगद, महाकाल, गरुड़ एवं विनता आदि की चर्चा की गयी है।

इन भक्तों की अद्भुत कथाएँ बहुत ही प्रेरक एवं शिक्षाप्रद हैं जो पाठक को शिवभक्ति की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

इस पुस्तक के अन्तिम खण्ड, 'शैवतीर्थखण्ड' में भगवान् शिव के अनेक तीर्थों जैसे द्वादश ज्योतिर्लिंगों से संबंधित 12 तीर्थों, अष्टमूर्तियों से संबंधित आठों तीर्थों, कैलास-मानसरोवर,

हाटकेश्वर, पंचकाशी, अमरनाथ, एलोरा तथा एलिफेण्टा के गुहामंदिर, खजुराहो, मदुरा, तञ्जौर, पक्षितीर्थ, महाबलेश्वर, कांगड़ा, भुवनेश्वर तथा मुक्तिनाथ आदि अनेक शैव-तीर्थ-स्थलों का वर्णन किया गया है।

इस पुस्तक के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि शिवपूजा से भोग एवं मोक्ष, सब कुछ प्राप्त हो सकता है। बिना शिवपूजा के अन्य देवता अपनी पूजा स्वीकार नहीं करते तथा शिवपूजा से सभी देवों की पूजा सम्पन्न हो जाती है। शिवपूजा लिंगपूजा के रूप में श्रेष्ठ मानी जाती है। कलियुग में पार्थिवलिंगपूजा को विशेष रूप से उत्तम कहा गया है। इसे सूतक एवं पातक में भी किया जा सकता है। चारों वर्णों, स्त्री, मलेच्छ तथा अन्त्यज आदि सभी इस लिंग की पूजा के अधिकारी हैं। यों तो शिवपूजा सभी वर्णों के लिये है तथापि पार्थिवलिंगपूजन में किसी भी प्रकार का वर्ण-आश्रम, ऊँच-नीच, स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े, हिन्दू-अहिन्दू का बन्धन नहीं है।

सभी प्रकार के मन्त्रों में '**ॐ नमः शिवाय**'-को सर्वश्रेष्ठ मन्त्र माना जाता है। पार्थिवलिंगपूजन के अधिकारियों की तरह इस मन्त्र के भी सभी लोग अधिकारी हैं। चारों वर्ण के स्त्री, पुरुष, बच्चे, बूढ़े, जवान तथा स्त्रियाँ, मलेच्छ, अन्त्यज, शुद्ध तथा अशुद्ध कोई भी व्यक्ति इस मन्त्र के जप का अधिकारी है। शैवतीर्थों में काशी का बहुत ही महत्त्व बतलाया गया है। यों तो भगवान् शिव के सभी तीर्थ एवं क्षेत्र मोक्ष देनेवाले हैं तथापि काशी की महत्ता का विशेषरूप से प्रतिपादन किया गया है। इसी प्रकार भगवान् शिव के सभी व्रत एवं मन्त्र भोग-मोक्ष प्रदान करनेवाले हैं फिर भी शिवरात्रिव्रत तथा पंचाक्षरमन्त्र की विशेष महिमा प्रतिपादित की गयी है। सभी प्रकार के स्तोत्र एवं कवच समान रूप से प्रभावशाली हैं तथापि 'अमोघशिवकवच' तथा 'शिवसहस्रनामस्तोत्र' का विशेष माहात्म्य बतलाया गया है।

व्यक्ति को अपनी-अपनी रुचि, योग्यता, श्रद्धा-विश्वास तथा साधन आदि के अनुसार मंत्र, स्तोत्र, व्रत, तीर्थ तथा कवच का प्रयोग करना चाहिये। क्योंकि फल का मुख्य हेतु श्रद्धा एवं भक्ति ही है। सभी तीर्थ, व्रत, स्तोत्र, कवच तथा मंत्रादि उपासक को उसकी श्रद्धा के अनुसार ही फल देते हैं।

शिवनिर्माल्य के ग्रहण करने से व्यक्ति के जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं। परन्तु शिवनिर्माल्य के ग्रहणसंबंधी नियम यह है कि जहाँ पर चण्ड का अधिकार नहीं होता वह ग्रहण करने योग्य है। चण्ड का अधिकार द्वादश ज्योतिर्लिंगों, पुराण-प्रसिद्ध देवी-देवताओं तथा ऋषियों द्वारा स्थापित लिंगों, साधु-संतों द्वारा स्थापित लिंगों, स्वयंभू लिंगों, धातु के अथवा धातु से आवृत्त लिंगों, तथा शिवप्रतिमाओं आदि में चण्ड का अधिकार नहीं होता। चण्ड अधिकृत लिंगों के प्रसाद को शालग्राम से स्पर्श करा देने पर वह ग्राह्य हो जाता है क्योंकि वह अब भगवान् विष्णु का प्रसाद हो जाता है। जिस प्रकार हनुमान्‌जी रामजी का प्रसाद ग्रहण करते हैं उसी प्रकार परम शैव

होने के कारण विष्णुजी भी भगवान् शिव का प्रसाद ग्रहण करते हैं। अतः किसी भी लिंग के नैवेद्य को भगवान् विष्णु को अर्पित करने के बाद ग्रहण किया जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रयोजन पाठकों को शिवोपासना से संबंधित सभी पहलुओं तथा शिवभक्तों से परिचित करवाना है। इन दोनों लक्ष्यों के पूरा होते ही प्रकारान्तर से शिवमहिमा का भी प्रतिपादन हो जाता है। यद्यपि अनेक प्रकाशित पुस्तकों में उपर्युक्त विषयों से संबंधित बातें पायी जाती हैं परन्तु उनमें एक तो सन्दर्भों का अभाव है तथा उनमें सभी आवश्यक बातों का समावेश नहीं है। इस पुस्तक की विषय-सामग्री कहीं पर भी संदर्भ-सहित पूर्णरूपेण नहीं प्राप्त होती। इस पुस्तक में कुछ बातें बार-बार आयी हैं परन्तु वे अलग-अलग सन्दर्भों में आने के कारण ऊबानेवाली नहीं हैं। इस पुस्तक के अध्ययन से जहाँ आस्थावान् भक्तों को भगवान् शिव की भक्ति की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन प्राप्त होगा वहीं पर अन्य लोगों को धर्मसंबंधी, विशेषतया शैवधर्मसंबंधी, अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

क्षमाप्रार्थना एवं आभार

इस पुस्तक में जो कुछ भी लिखा गया है वह शास्त्रों पर ही आधारित है। अपनी ओर से इसमें कुछ भी ऐसा नहीं कहा गया है जो किसी को आपत्तिजनक हो। इस बात की पूरी सावधानी रक्खी गयी है कि किसी को भी कहीं पर आपत्ति न हो तथा किसी की भावनाओं को आघात न पहुँचे। परन्तु इस सावधानी के बावजूद भी अगर किसी को किसी स्थल पर आक्षेप हो या उनकी भावनाओं को आघात पहुँचता हो तो उसके लिये हम क्षमा चाहते हैं तथा उन स्थलों की सूचना देने पर हम उसका अगले संस्करण में ध्यान रखेंगे।

संस्कृत का विद्यार्थी न होने के कारण तथा आवश्यकता पड़ने पर विशेषज्ञ विद्वानों की सलाह प्राप्त न होने पर मैंने अपने विवेक से स्वयं ही कई श्लोकों की व्याख्या की है। ऐसे स्थलों पर भूलें हो सकती हैं। अतः विद्वान् पाठकों से क्षमा चाहता हूँ तथा उनसे निवेदन है कि ऐसे स्थलों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करायें ताकि उनकी पुनरावृत्ति अगले संस्करण में रोकी जा सके।

पुस्तक लिखने में कई विद्वानों की पुस्तकों का प्रयोग किया गया है। उनमें से अधिकांश का स्पष्ट हवाला पुस्तक में यथास्थान दे दिया गया है। जिन स्थलों पर प्रमादवश या किन्हीं कारणों से हवाले छूट गये हैं उन विद्वानों से मैं क्षमा चाहूँगा। पुस्तक में कुछ ऐसे स्थल भी हो सकते हैं जिसकी सामग्री अन्य पुस्तकों से ली गयी हो परन्तु उन स्थलों का उद्धरण न दिया गया हो। इस तरह की अनजान में या प्रमादवश हुई भूलों के लिये भी विद्वानों से क्षमा चाहता हूँ।

इस पुस्तक में दिये गये अनेक उद्धरण कुछ पुस्तकों के बहुत ही प्राचीन संस्करणों से लिये गये हैं। इसका कारण यह है कि लेखक के प्रयोग में आनेवाले पुस्तकालय में उन पुस्तकों के

नये संस्करणों का अभाव था। अत: पाठकों को इस कारण से होनेवाली कठिनाई के लिये मैं क्षमा चाहता हूँ। इसी प्रकार कुछ पुस्तकों के भिन्न-भिन्न प्रकाशनों का उपयोग किया गया है। अत: संभव है कि कहीं पर प्रमादवश उद्धरण देते समय प्रकाशनों का स्पष्ट उल्लेख करना छूट गया हो। इस प्रकार की होनेवाली भूल के लिये भी मैं क्षमा चाहता हूँ।

अन्त में छपाई में होनेवाली भूलें जिनसे पाठकों को विषय समझने में कठिनाई का सामना करना पड़े, उसके लिये भी मैं क्षमा चाहता हूँ।

मैं गुरुदेव पूज्यपाद श्रीशिवलौती महाराज का अत्यन्त आभारी हूँ जो न केवल पुस्तक लिखने के प्रेरणा स्रोत रहे अपितु संपूर्ण पुस्तक के प्रकाशन के व्यवस्थापक भी हैं। उन्होंने पुस्तक के शीर्षक, स्वरूप एवं सामग्रीसंबंधी महत्त्वपूर्ण विचार देकर तथा पुस्तक के प्रकाशन की सम्पूर्ण जिम्मेवारी ग्रहण कर मुझे अनुगृहित किया है, इसके लिये मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

पुस्तक लिखने के लिये मैंने जिन-जिन पुस्तकों का प्रयोग किया है उनके लेखकों एवं प्रकाशकों का भी आभार प्रदर्शन करता हूँ। प्रकाशकों में मैं गीताप्रेस, गोरखपुर का विशेष रूप से आभारी हूँ क्योंकि उनके विपुल प्रकाशनों से ही इस पुस्तक की अधिकांश सामग्री ली गयी है। पुस्तक लिखते समय श्लोंकों के अर्थ-संबंधी तथा अन्य व्याकरण-संबंधी जो-जो परामर्श जिन-जिन विद्वानों से मैंने प्राप्त किया है, मैं उन सबका आभार व्यक्त करता हूँ। इन विद्वानों में संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डॉ० अरविन्द कुमार तथा डॉ० सुरेन्द्र मोहन मिश्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस पुस्तक के टंकण, प्रूफ-संशोधन तथा प्रकाशन के प्रत्येक स्तर पर यथायोग्य सहायता करनेवाले श्री विनोद तनेजा का भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ। उन्होंने बड़ी चुस्ती से प्रूफ एवं टंकण जैसे कठिन कार्य को निपटाया। इसी प्रकार डॉ० प्रकाशवीर अरोड़ा का भी मैं आभारी हूँ जो पुस्तक की तैयारी के प्रत्येक स्तर- शीर्षक एवं आकार-प्रकार के निर्धारण से लेकर छपने तक-पर यथायोग्य सहायता करते रहे। अन्त में इस पुस्तक को लिखने में हमें जिन-जिन लोगों से प्रत्यक्ष अथवा परोक्षरूप से किसी भी प्रकार की सहायता प्राप्त हुई है, उन सबका आभार व्यक्त करता हूँ।

चूड़ेश्वर महादेव मन्दिर
गैल(कोटी), सोलन (हिमाचल प्रदेश)
मार्च 2002

विनोद शंकर